

आर्य समाज
Arya Samaj

वलसूययाहलीकं प्रथमकं मूर्द्धवाशार्थं ॥ २४ ॥ अकस्मात्तुलनायनं अल्पायु
 धनदय सात्किजवजार्ग ॥ दिव्यध्यान ४ शास्त्र ॥ २५ ॥ कथं वेति काया वा वीजना
 धित नाना जायत वा वाधित वीजन वा हतं यत्तु मृत्युमास दयन सात्कि सदस्मा
 न्स्मामि वलिं दयत ॥ कथं कृतं ॥ अथवा मांसादिति रुद्रया न ॥ दानकं न पापं ॥ २६ ॥
 घृतं पूजितं दिव्यं १० गुरु शार्थं ॥ २७ ॥ अथिदाहं सूर्यय विमलुल धूमकतु निर्घात
 कस्य यत नायादि उल्कापातम वा विश्वनाय गित काकादिने श्व गाला इति दयाधा
 वमवकाय हि वा अर्ग ॥ ॥ यत्तु कृतं तुलना कथा यता निरुपपात्यतं ॥ विस्वत

वज्रदान ३३ यत्तु धनकायादिना वयवाहयत ॥ कृतायुति वलि पूजा वाधित लवकं
 रिक्त वा वायं यूननम् ॥ १२ ॥ अथवा यत नाना निमित्त पाप ॥ यत्तु वज्रिवति वर्षमास
 नमृत्यु ॥ तस्य सात्कि दय पूजनं सप्तवहामं ॥ सप्तवहं दानं लका मा विपूजनं दिवलि
 वप्रवाल यत ॥ २० ॥ नाना रुतं जूषका ययवति कलादिन मृत्यु स्वाम्यादिकलय
 ३३ ॥ तस्य सात्कि वज्रत घटित न वयवादि दान उ दान वलि पूजा नतन सात्कि ॥ २१ ॥
 ॥ मानूखस्य गवील दय कन्या कमान अथवा नलना वीवा जायत नन मादय व १५
 एवत् स्रक्लं हन्ता धनदय क नर्द वा नत गानि दया तीर्थ गत्वा स्नानं कल सप्त

जा ता वा अक्षत व प्रहया ० का वथ दाने कां ग पाय घृत कि व पूर्वु घा उ ग वृष व न्य वि
 म्व सू व लु ध ग व ठिकां सूर्य वि म्व न का ति व ता म् पा य दा त र्थ की व श ऊ र्ने व त द ग नि
 रु व ति ॥ २२ ॥ य व गि ल य द न ग अथ वा वे ल्य र म् रं र म् स्त न सा नि रु रु या त ॥ २३ ॥
 मे ग न ऊ त द टि त र्थ व न का वि धि नां र्थ व न का या ० स ध म् म् पू लु वी क श्र ग ल य के का मा
 वी श्र का न य त त ने सा नि ॥ २४ ॥ रु मि का नि नि का नि म्वा अं ध का व सु मा कू लं इ दि ने
 वि वि धि व र्धु श्रे य व त क वा रु रं ग क ॥ २५ ॥ अ य र्ध वा रु द न्ध क पू र्ध वा रु न द न्ध वा
 क रं ग व धि य न न इ रि दं स क वि द म म ॥ २६ ॥ का क ग प स घा त क ग स्ना ना द वा अ

८

व ध न द र्थ ॥ २७ ॥ गान वा रु रं य म हा इ व ॥ गृ ह म् अ कान मृ त् ॥ २८ ॥ र वां ग नि ॥ ता म्
 या प य न य घृत पू व धि त्वा न ऊ त ग स्त गृ ह रा व कृ त्वा म लु ल म् अ य ति द्वा य दा त य सु
 व र्धु द दि ग क म् य त व लि पू जा क व स द य पू ज य त ॥ २९ ॥ य व ग य धू र्ध कृ त्वा र व म् प दा व रा
 कृ त्वा का क गृ ह य वा द य त ॥ ३० ॥ अ पि वा द द न क क व स कृ य व लि ने व य प य ३ ति ग र्वा लः
 स्त न व लि ऊ ज मा न नि वं शि नि न क ग याल क ने ॥ अथ वा का क स गृ ह व लि द त्वा ३
 व ल्म मि नि य त ॥ ३१ ॥ कू सु म वा वि त अ न्वा कू सु म य र व ति ॥ य य थो पि वि न श्र ति ॥ मा म्
 य य द ध न ध नो वि न स्य ति ॥ ग नि व लु वि म्व कां ग पा य प वि पू वि त इ व द दि ग व लि

युवालश्रकावयत् ॥ ३१ ॥ हयिलिसर्घलाह सूर्ययवगनगृह गृहयतिशार्यापू
 यथोपिस्वाविनयति शार्ववाययमासनगानिकिद्रुयागचिद्वस्वसूवर्षुदानः
 स्वयवतापूजनसंघराज्यवजनगानिकि ॥ ३२ ॥ दवधोनिगपूज्यश्रुन्याप्र
 न्यागदस्वाच दव्यासर्वमेदयियगार्थसर्वयवानांपूज्यत् पूर्ववत् नवमा ३३ १०
 मानुष्यनिबोदस्तयादादीनां यस्यगृहयवगयत् स्वामिमृत्युषट्मासदासा
 निकिद्रुयागयचनकाविधाननचन्द्रविम्बसहितसूवर्षुदक्षिणमेदावलिश्र
 दाययत् ॥ पूर्वविमूर्खदानराज्यविधानात् ॥ ३३ ॥ मन्दिपनगववायाममध्व

अपूर्वयदिविनस्यातिवनचनादिषवगयत् स्वामिमृत्युषट्मासांयनकवगयद
 यथनवागानिकावयत् ॥ कवगयूजननवो ह्रमदक्षिणतिवयायमकैवमुश्र
 यदाययत् ॥ ३४ ॥ कावसेत्युजायनन स्वामिमृत्युषट्मासायनकवगानिकिद्रुया
 गदानतप्रेयार्थद्युतपूर्वितेखजदक्षिणयकालयत् ॥ ३५ ॥ दिनास्वावातायजाय
 त्तेनवत्मासनस्वामिमृत्युगानिकिसयवजाताश्रदानेअथवादगसंगामुपायवका
 कतपूजयत् दिव्यतरदादगवतिकानि सूवर्षुदक्षिणश्रुयदाययत् ॥ राजसक
 ल्यानीकिक ॥ ३६ ॥ यस्यगृहयवावयवा तथेवदिदिहगीतवद्रुतवप्राकयेत्मासनवि

यथास्वामिः अध्वामुक्तिः सूर्यपातनार्थं वरुणं तस्य गान्तिः इत्यात् यद्गुर्विधाय
 धाम किना पूर्ववत् ॥ ३८ ॥ गृहं वक्तुं विदुषा फलं न ववर्ष न नरुवति स्वासिमृष्यः ॥
 नियमं वक्तुं यतनं स्वमिमृष्य कौमादाय जलवलिमर्ध्यादि यतः अन्यथा मृष्टिकाया
 दाय पूर्ववलिधत्तुं विधानं नरुमिदानं सुवर्षदानं महावलिं गृहकलितदानं ॥ ३९ ॥
 कामाविष्टं संधराज्यं यथागतिः ॥ ३९ ॥ गृहं सूर्यपातनं स्वासिमृष्यः यत्मा
 सवर्षने च गान्तिकावयत् ॥ सुवर्षदानं वलिधत्तुं वतिका २० संधराज्यं ३ कालं
 यत् कुलं कृष्य न ३ कुर्यात् ॥ ३० ॥ सवीवजातिं वदद्वयं सफमासनं जीवति गान्ति

इत्यात् ॥ ३९ ॥ गृहं सूर्यपातनं स्वासिमृष्यः यत्मा सवर्षने च गान्तिकावयत् ॥ सुवर्षदानं वलिधत्तुं वतिका २० संधराज्यं ३ कालं
 यत् कुलं कृष्य न ३ कुर्यात् ॥ ३० ॥ सवीवजातिं वदद्वयं सफमासनं जीवति गान्ति
 ॥ ३१ ॥ गृहं सूर्यपातनं स्वासिमृष्यः यत्मा सवर्षने च गान्तिकावयत् ॥ सुवर्षदानं वलिधत्तुं वतिका २० संधराज्यं ३ कालं
 यत् कुलं कृष्य न ३ कुर्यात् ॥ ३० ॥ सवीवजातिं वदद्वयं सफमासनं जीवति गान्ति
 ॥ ३२ ॥ गृहं सूर्यपातनं स्वासिमृष्यः यत्मा सवर्षने च गान्तिकावयत् ॥ सुवर्षदानं वलिधत्तुं वतिका २० संधराज्यं ३ कालं
 यत् कुलं कृष्य न ३ कुर्यात् ॥ ३० ॥ सवीवजातिं वदद्वयं सफमासनं जीवति गान्ति

थकयविष्टुविर्ग ॥ कजतघटित खज दानेराक ॥ ३३ ॥ सुभाकी ॥ ३३ ॥ हामकालयीदीसं
 चर्तुखवति ॥ हामगन्धदीनारवति इन्धनानावर्तुसमूखेव ॥ कजमानानजीवति मृ
 त्युनावर्षकल गानिर्गुह्यागु सुवर्तुदानराक ॥ ३३ ॥ यस्यागुहमीनवाक मुगावा
 यतिगावायुनूयस्य खनरुभावानजीवति वर्षद्वयग गानिर्घटयुवित इववज २२
 गह् अकत राक ॥ ३३ ॥ घटदानसुवर्तुदानक ॥ ३४ ॥ संगमतदागलयायस्कविष्ठा
 कृययगाल्यानानावर्तुगार्य दृष्टलसयामृष्ट ॥ गानिर्गुह कलसयुजनं क्लनवव
 लिक्कयवलि नागयुजा ॥ कललदायाधन यययुष्टितिल इवा मालायागकुष्ठसर्व

इलयदानांग कृपनागयुजन जलहाम ॥ दानगानु राजमघुतयुनित दानकलसा
 निरवति ॥ ३५ ॥ यस्याकपवातिकाया धानाविहीवायितन अनायजाय गंगराया
 वागुहस्वामिंवा मिथक ॥ यवमासनवा यवाधनवा तस्यसानिथानवलि तीर्थव
 लि दानकांगयायवत्य विम्ब घुतयुष्टुयनेदिनवा गरुक्षय यवविदिनवायथम
 वलिसमयवककालयत ॥ ३६ ॥ यस्यागुहउद्यान गृहसमीपवा ॥ ३७ ॥ खलपाक
 स्वामिमृष्टयय ॥ ३८ ॥ तस्यगानिसुवर्तुदि कुरुम्बउयस्मित नानावपुवीयायि
 दाययत ॥ ३९ ॥ खवापितक्कन ॥ कगयुजनक ॥ वलिषदान रिक्कवावायराक ॥ ४० ॥ दा

दापयत् कामात्री पूजनं ३३ नमः ॥ ३८ ॥ अकस्माद् दवावयवसु नवीनवा अ
 न्निरुद्धि नन नजीवति यश्चाथ गन्तुं शक्यते ॥ ३९ ॥ अकस्माद् दवावयवसु नवीनवा अ
 सक्तिता दिव्ये दाने दवस्तु नमः पूजा महावलि महावक पूर्ववत् ॥ ४० ॥ अकस्माद् दवावयवसु नवीनवा अ
 ताकावायः अकथनः ॥ ४१ ॥ अकस्माद् दवावयवसु नवीनवा अ १३
 वार्था वातायः अदिष्टे वायः अदन्तायः अजायकः ॥ ४२ ॥ अकस्माद् दवावयवसु नवीनवा अ
 थानवलि तीर्थवलि नागवलि कलंग पूजन कलसकल रुमिवातिकायां प्रादय
 त रुगवलि वक गान्ति ॥ ४३ ॥ अकस्माद् दवावयवसु नवीनवा अ

वात्मी कः उत्पन्नं वरुधनं कथं नानाभागी अन्निरुद्धि नन नजीवति यश्चाथ गन्तुं शक्यते ॥ ४४ ॥ अकस्माद् दवावयवसु नवीनवा अ
 हारुथत् ॥ ४५ ॥ अकस्माद् दवावयवसु नवीनवा अ दानं वज्रं सुवर्णं सफेदं त्रिदशं कलानव
 यरुदानं हारमं कलानव यवकायः अथ ॥ ४६ ॥ अकस्माद् दवावयवसु नवीनवा अ
 र्यं दक्षिणायदागव्यं गान्तिरुवति निश्चितं ॥ ४७ ॥ अकस्माद् दवावयवसु नवीनवा अ
 निरुद्धि नन नजीवति यश्चाथ गन्तुं शक्यते ॥ ४८ ॥ अकस्माद् दवावयवसु नवीनवा अ
 शिवावायः दानं ॥ ४९ ॥ अकस्माद् दवावयवसु नवीनवा अ सफेदं त्रिदशं कलानव
 न्नामि यद्गुणं कलंग विद्रवलि पूजनं ॥ ५० ॥ अकस्माद् दवावयवसु नवीनवा अ

[illegible]

अथ मन्त्रादि तन्त्रादि विषयः समाप्तः ॥

॥ ६३ ॥

ॐ ॥

SEAMONT 1354

135

OLD HALL

OLD HALL